बहुत अच्छी कहानियां, लेकिन...

स्वयं प्रकाश

बाल साहित्य बच्चों में कल्पनाशीलता, सुरुचि, भाषायी सौन्दर्य और भाषायी कौशलों का विकास तभी कर सकता है जब लेखक स्वयं निर्बंध होकर बाल संसार का हिस्सा बनें।

सबसे बढ़िया

इस पुस्तक में आंद्रियन बेट्झ की लिखी एक रोचक कहानी है जिसमें चूहा अपनी बेटी के लिए संसार का सबसे बली पति ढूंढ़ने निकलता है और सूरज-हवा-बादल-हंस आदि से होता हुआ अंत में उस चूहे को ही सबसे ताकतवर पाता है जिसे उसकी बेटी ने अपने लिए चुन रखा था। यह कहानी न सिर्फ रोचक है बल्कि पाठक को आत्मविश्वास का संस्कार भी देती है। अपनी-अपनी जगह सूरज-हवा-बादल सब बलशाली हो सकते हैं, लेकिन कोई काम ऐसा भी हो सकता है जिसके लिए चूहा ही सबसे अधिक उपयुक्त हो। ऐसी पारम्परिक लोककथाएं विश्व की लगभग हर भाषा में पाई जा सकती हैं। रूसी भाषा में एक लोककथा है जिसमें एक पथरकट सूरज-चंद्रमा-हवा-बादल आदि-आदि के पास जाने के बाद अंत में पाता है कि वही सबसे बली है। ऐसी लोककथाओं के साहित्यिक रूपांतरण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण विजयदान देथा की कहानी 'दूजौ कबीर' है। मुमकिन है इस उम्र में पुस्तक के बाल या किशोर पाठक कहानी का अर्थ और आशय पूरी तरह आत्मसात न कर पाएं और मात्र किस्से की रोचकता पर ही मुग्ध होकर रह जाएं, लेकिन अपनी जगह अपने अप्रतिम होने का यह संदेश संस्कार रूप में उनके मन के भीतर पड़ा रहेगा।

मुझे नहीं मालूम आंद्रियन बेट्झ किस देश के लेखक अथवा लेखिका हैं (नाम से जापानी तो नहीं लगते) किन्तु पुस्तक में चूहा पात्रों को जापानी वेशभूषा में दिखाया गया है। चित्रांकन क्रिस्तीना ओंग का है। यही कहानी थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ जनवरी 2006 की 'चकमक' में छपी थी। उसके चित्र प्रसिद्ध चित्रकार शोभा घोर ने बनाए थे।

मेरा प्रश्न यह है कि बच्चों की कहानियां जब किसी अन्य देश के बच्चों के लिए परोसी जाती हैं तो उनका अनुवाद पर्याप्त होता है या रूपान्तर भी आवश्यक होता है। अर्थात् यदि कहानी की भाषा को बदला जा रहा है तो परिवेश के अनुकूल चित्रांकन को भी रूपांतरित किया जा सकता है या नहीं ?

मसलन इसी कहानी को लें। इसमें बेटी बाप को बताती है कि उसने जीवनासाथी के रूप में किसी को पसन्द कर लिया है। 'चकमक' वाले अनुवाद में बाप स्वयं बेटी के लिए वर ढूंढ़ने निकलता है। शोभा घोर का सूरज तिलक और मूंछोंवाला 'अपना' सूरज है जबकि यहां सूरज गंजा और मुंछमुंडा है। 'चकमक' वाले रूपान्तर में दीवार गारे-चूने की है, जबकि यहां दीवार लकड़ी की है। क्या आपको नहीं लगता कि सम्प्रेषण में इन छोटी-छोटी चीजों से भी बहुत फर्क पड़ता है ! मेरा ख्याल है प्रकाशकों को इस बारे में विचार करना चाहिए।

लेखक परिचय :

हिन्दी के जाने-माने कहानीकार। संप्रतिः सेवानिवृत्ति के बाद पूर्णतः लेखन के लिए समर्पित।

सम्पर्क :

3/33, ग्रीन सिटी, ई-8, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-39

2. राजा और माली

आंद्रियन बेट्ज़ की एक और दिलचस्प और अर्थवान कहानी पुस्तक है 'राजा और माली'। इस कहानी में एक राजकुमार है जो अपने खुशामदी मुसाहिबों से घिरा रहता है और जब उसका सामना एक स्पष्टवक्ता माली से होता है तो पहले तो वह खुश होता है, बाद में माली को जेल में डाल देता है और अंत में उसे माली की स्पष्टवादिता का मोल समझ में आता है।

कहानी बहुत सुन्दर है और बाल पाठकों को एक जरूरी संस्कार देने वाली है। कितने आधुनिक लेखकों ने बच्चों को चाटुकारिता से सावधान रहने की सीख देने वाली कहानी लिखने की बात सोची होगी! हालांकि पारम्परिक नीति कथाओं में ऐसी बातें खूब हैं। इस लिहाज से कहानीकार ने एक जरूरी काम पूरी रोचकता के साथ किया है।

कहानी के अंत में एक युक्ति से काम लिया गया है जो बाइबल की इस सीख पर आधारित है कि गुनाहगार को पत्थर जरूर मारे जाएं, लेकिन पहला पत्थर वह मारे जिसने कभी कोई गुनाह न किया हो! इसे इतनी कुशलता से इस्तेमाल किया गया है कि एक तो 'चमत्कार' की पारलौकिकता या अलौकिकता खण्डित हो गई और दूसरे गलती करने पर होनेवाले अपराधबोध का शमन हो गया। बेहद दुरुस्त बात है। गलती हर कोई कर सकता है। उसे न दोहराने का निश्चय तो अच्छी बात है, लेकिन उसकी वजह से शर्मिन्दा रहना अच्छी बात नहीं। अपनी गलती मान लेना उससे उपजे अपराधबोध से मुक्त होने का सबसे सहज उपाय है। लेखक की समझ इन सवालों के बारे में साफ न होती तो इतनी सुलझी कहानी निकलना संभव नहीं था।

इस पुस्तक में जो चित्र बनाए गए हैं वे एकदम भारतीय परिवेश वाले हैं। पात्रों की वेशभूषा और पार्श्वभूमि जिसमें मोर, हाथी, फलदार पेड़ आदि हैं। हालांकि ये बात और है कि मैंने आज तक किसी माली को शतरंज खेलते नहीं देखा। वे अपनी फुर्सत में अष्ट-चंग-पो या सोलासार जैसे सादा खेल खेलते हैं। ज्यादा से ज्यादा ताश या चौपड़। लेकिन शतरंज ? वह तो नवाबों का खेल है।

इस पुस्तक के लिए चित्र भी क्रिस्तीना ओंग ने ही बनाए हैं। विदेशी पुस्तक में भारतीय परिवेश के चित्र देखकर अच्छा तो लगता है लेकिन मन में एक शंका भी उठती है कि क्या ये लोग भारत को अब भी राजा-रानियों का देश ही समझते हैं ? अगर नहीं तो ऐसा क्यों होता है कि राजा-रानियों का जिक्र आते ही इन्हें भारत याद आने लगता है। खैर, हो सकता है यह बात को जरा ज्यादा ही खींचना हो।

कुल मिलाकर पुस्तक बहुत अच्छी है।

3. सूरज और चांद आकाश में क्यों रहते हैं

इस कहानी में आंद्रियन बेट्ज़ की कहानी का एक और आयाम दिखाई देता है। जहां पहली दो कहानियों का केन्द्रबिन्दु लोक व्यवहार के नैतिक प्रश्न थे वहीं यह कहानी कल्पना का सहज कल्लोल है। प्रश्न यह है कि सूरज और चांद आकाश में क्यों रहते हैं ? सूरज और चांद को लेकर बच्चों से बड़ों तक न जिज्ञासाओं का कोई अंत है न फेण्टेसियों का। महाभारत के कर्ण के सूर्य पुत्र होने से पुराणों के राहू-केतू से लोकगाथाओं के चन्दामामा तक। इस पुस्तक में लेखक ने कल्पना की है कि सूरज और चन्द्रमा दो भाई हैं जिन्होंने मिलकर एक घर बनाया और अपने मित्र पानी को अपने घर आमंत्रित किया। पानी ने विनम्रता और संकोच से कहा कि मेरा कुनबा बहुत बड़ा है, मुझे सबको साथ लाना पड़ेगा और इतने लोग घर में समाएंगे कैसे ? इस पर सूरज और चन्द्रमा ने और बड़ा, फिर और बड़ा, फिर और बड़ा घर बनाया और अंत में जब उनका मित्र पानी सकुटुम्ब उनके घर आया तो पानी और उसके स्वजनों को जगह देने के लिए सूरज और चन्द्रमा उठते-उठते आसमान में पहुंच गए।

अर्थ तो इसमें से भी निकाले जा सकते हैं, और बहुत गहरे, लेकिन इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। सहज कल्पनाशीलता का प्रफुल्लित मन से आनन्द लिया जाए, यही पर्याप्त है। कहने की जरूरत नहीं है कि ऐसी कहानियां बच्चों के सोच-विचार और कल्पना को मुक्त करने में कितनी बड़ी भूमिका अदा करती हैं।

पुस्तक के चित्र पट्टी गुडनाऊ के बनाए हुए हैं और बहुत अच्छे हैं। बच्चे तत्काल इनसे तादात्म्य स्थापित कर लेंगे।

एक बात मैं प्रकाशक से कहना चाहता हूं। पुस्तक के अंत में यदि लेखक - अनुवादक और चित्रकार का संक्षिप्त परिचय भी रहे तो क्या हर्ज है ? बच्चों की पुस्तकों में यह जानकारी देना गैरजरूरी क्यों माना जाता है ? भाषा और साहित्य की पाठ्यपुस्तकों में तो कई बार लेखक या कवि का नाम तक नहीं दिया जाता। ऐसा क्यों होना चाहिए ? ◆

समीक्षित पुस्तकें -

1. सब से बढ़िया, लेखक : आंद्रियन बेट्ज़, पृ. 24, स्कॉलास्टिक, मूल्य : 30.00 रु.
2. राजा और माली, लेखक : आंद्रियन बेट्ज़, पृ. 24, स्कॉलास्टिक, मूल्य : 30.00 रु.
3. सूरज और चांद आकाश में क्यों रहते हैं, लेखक : आंद्रियन बेट्ज़, पृ. 24, स्कॉलास्टिक, मूल्य : 30.00 रु.